RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मध्यकालीन भारत में स्त्रियों की सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में भूमिका

चरण सिंह
जे.बी.टी. अध्यापक गॉव व डा.काब्रच्छा तहसील उचाना ;जीन्द

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
सामाजिक, राजनीतिक, मुगल, सल्तनतकाल, मुस्लिम समाज, व्यापार, प्रशासनिक, जागीर, हिन्दू, जागीर, उपाधि

ABSTRACT

किसी भी काल की संस्कृति का मूल्यांकन उस समय की स्त्रियों की स्थिति से लगाया जा सकता है। प्राचीन काल में ऐसे दृष्टान्त मिले हैं कि स्त्रियों ने राज्य का प्रशासन अपने हाथ में लिया। पूर्व मध्यकालीन युग में हर्ष के समय में उसकी बहन राज्यश्री अपने पति की मृत्यु के उपरान्त अपने भाइयों के साथ राज्य के प्रशासनिक कार्यों में मन्त्रणा देती थी। राज्य दरबार में आदर का स्थान प्राप्त था।

हर्ष के समय में वे महलों की देखभाल के लिए 'प्रतिहारी' के पद पर रखी जाती थीं। वे राजकीय छत्र और पुष्पदान को धारण करती थीं और चौरी घुमाती थीं। वे पान और फूल भी महल के लोगों को पहुंचाती थीं। राजमहल के उत्सवों में संगीत व नृत्य में भाग लेती थीं। कभी–कभी उनका उपयोग शत्रु के प्रदेश में गुप्तचरों के रूप में भी किया जाता था। वे राजा के साथ शिकार पर भी जाती थी। दक्षिण भारत के वृतान्तों से हमें पता चलता है कि स्त्रियाँ पुरूष वर्ग के अधीन नहीं थीं। राजपूत काल में राजकीय परिवारों की लड़कियों को प्रशासन कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता था। कश्मीर और दक्षिण भारत में भी कई दृष्टान्त मिलते हैं, जहाँ स्त्रियों ने देश की बागडोर अपने हाथ में ली। काकतीय राज्य की रदम्बा ने 40 वर्ष तक राज्य किया। राजमहलों में स्त्रियाँ ही राज किया करती थीं। राजमहलों में स्त्रियाँ परिचायकों के रूप में भी कार्य करती थीं। वे अंगरक्षकों के पद पर नियुक्त की जाती थीं।

अपने इस शोध–पत्र में हम मध्ययुगीन भारत में स्त्रियों की सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में भूमिका पर नज़र डालेंगें।

प्रस्तावना

सल्तनत काल में मुस्लिम स्त्रियों ने समाज के विविध क्षेत्रों में रूचि दिखाई। विविध कलाओं के विकास में भी उनका योगदान रहा। दिल्ली के सुल्तानों में हरम में स्त्रियों की संख्या अधिक थी। सुल्तान की माँ को अधिक सम्मान दिया जाता था। उसके बाद सुल्तान की मुख्य बेगम का स्थान आता था। राजकीय परिवार की महिलाओं को ऊँची–ऊँची उपाधियाँ दी जाती थीं। जैसे मुल्के–जहाँ, मखदूमे–जहाँ आदि। इल्तुतमिश की पत्नी शाह तुर्कन बड़ी महत्त्वाकाँक्षी महिला थी। राजनीति में अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए उसने रजिया की हत्या का षड्यन्त्र किया। अन्त में वह अपने प्रयासों में विफल हुई।

दूसरा दृष्टान्त रजिया का है, जिसने गद्दी पर बैठने के बाद सारी सत्ता को अपने हाथों में केन्द्रित कर लिया। बहुत से रूढ़िवादी तुर्की अमीर एक स्त्री को सुल्तान के पद पर नहीं देख सकते थे। रजिया का पर्दा त्यागना, खुले दरबार में बैठना, घोड़ों की सवारी करना अमीरों को अच्छा नहीं लगा। अन्त में अमीरों ने रजिया को पदस्थ कर दिया। जलालुद्दीन खिलजी की पत्नी मल्के–जहाँ ने अपने दामाद अलाउद्दीन के ऊपर नियन्त्रण रखने का प्रयास किया, जिससे अलाउद्दीन का घरेलू जीवन दुःखमय हो गया और उसे कड़ा में जाकर रहना पड़ा। जलालुद्दीन की हत्या करने के बाद अलाउद्दीन ने मुल्के–जहाँ और उसके लड़के को छलपूर्वक बन्दी बना कर उनका अन्त करवा दिया।

अलाउद्दीन के कठोर शासन के अन्तर्गत स्त्रियों को कोई बढ़ावा नहीं मिला। उनकी पत्नी कमला देवी ने जो राय करन बघेल की भूतपूर्व रानी थीं, सुल्तान को अपनी पुत्री देवल रानी को अपने पास बुलाने के लिए कहा। इस कारण सुल्तान ने देवगिरी पर आक्रमण करने के लिए आदेश दिया। क्योंकि उस समय कमला देवी अपने पिता के साथ देवगिरी में शरण लिए हुए थी। अलाउद्दीन के समय में बहुत–सी हिन्दू स्त्रियों का विवाह मुस्लिम राजकीय परिवार में हुआ। फीरोज तुगलक की माँ हिन्दू महिला थी।[1]

मुस्लिम स्त्रियों ने संगीत में रूचि दिखाई। जलालुद्दीन खिलजी के शासन काल में फतूहा और नसरत खातून दो प्रमुख नायिकाएँ थीं। कभी–कभी मुस्लिम स्त्रियों ने हिन्दू स्त्रियों की तरह 'जौहर' की प्रथा का पालन किया। फिरोज तुगलत और सिकन्दर लोदी ने मुस्लिम स्त्रियों के सन्तों की मजारों पर जाने पर प्रतिबंध लगाया।[2]

अतः उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिति संतोषजनक नहीं थी।

मुगल काल में सल्तनत काल की अपेक्षा स्त्रियों की अवस्था अधिक संतुलित थी।

बाबर ने तैमूर और चंगेज खाँ की परम्पराओं का अनुसरण किया और अपनी स्त्रियों को राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। परन्तु बाबर ने सम्प्रभुत्ता का अधिकार उन्हें नहीं दिया। जिस समय बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा की मृत्यु हुई (1494 ई.) उसकी उम्र 11 वर्ष की थी। अपनी दादी एहसान दौलत बेगम के निर्देश से बाबर ने प्रशासन का कार्य चलाया और अपनी स्थिति सुदृढ़ की। बाबर की माँ कुतलुक निगार खानम सदैव युद्धों में बाबर के साथ रही। बाबर की पत्नी महीम बेगम ने अपने पति की कठिनाइयों में सर्वदा उसका साथ दिया। अपनी योग्यता के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कारण राज्य में उसको अधिक सम्मान प्राप्त था और बाबर के बगल में दिल्ली के तख्त के समीप बैठती थी। बाबर की मृत्यु के 2 वर्ष के बाद तक वह राजनीति में भाग लेती रही। बाबर की दूसरी पत्नी बीबी मुबारिका यूसुफजाई कबीले की थीं। यूसूफजाई कबीले के लोगों और बाबर के बीच उसने समझौता कराने में योगदान दिया था, जिसके कारण बाबर का अधिकार अफगानिस्तान पर बना रह सका।[3]

मुगलकाल में राणा सांगा की पत्नी रानी कर्णावती का नाम प्रसिद्ध है। उसने अपने पति को अधिक प्रभावित किया। उसने अपने दो पुत्रों, विक्रम और ऊद के लिए बड़ी–बड़ी जागीरें सुरक्षित करवाई।[4] उसने बाबर से सम्पर्क स्थापित किया जिससे उसकी सहायता से वह मेवाड़ की गद्दी पर अपना प्रभाव बनाए रख सके। इस कार्य में यह असफल हुई। 1531 ई. में उसका पुत्र विक्रमादित्य मेवाड़ की गद्दी पर बैठा जो निकम्मा था। उसे अभिजात का कार्य अपने हाथ में लिया। बहादुरशाह के आक्रमण से स्थिति बिगड़ गई। उसने हुमायूं को राखी भेजी और सहायता की प्रार्थना की लेकिन उसे सहायता नहीं मिल सकी। अन्त में रानी ने जौहर किया और चित्तौड़ पर बहादुरशाह का अधिकार हो गया।[5]

रानी दुर्गावती अपने पति की मृत्यु के बाद (1548) अपने नाबालिग पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका बनी और राज्य का शासन अपने हाथ में लिया। जब तक वह प्रभावशाली रही उसके राज्य में कोई नहीं हुआ। अबुल फजल ने उसकी सराहना की है और लिखा है कि बाजबहादुर के विरूद्ध युद्ध में वह सदैव सफल रही। उसने अकबर के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं किया। यह अकबर के विरूद्ध युद्ध में वीरता से लड़ी। पराजित होने के भय से उसने आत्महत्या कर ली (1564)।[6]

हुमाँयू के शासनकाल में खानजादा बेगम ने जो बाबर की बड़ी बहन थी, दरबार में महत्त्वपूर्ण स्थान हांसिल किया। महीम बेगम की मृत्यु के बाद उसे 'पादशाह बेगम' की उपाधि से विभूषित किया गया। उसने हुमाँयू और उसके भाईयों के बीच समझौता कराने का प्रयास किया, परन्तु वह असफल रहीं। हुमाँयू के चचेरे भाई सुल्तान मिर्जा की पत्नी हराम बेगम प्रशासकीय योग्यता के लिए प्रसिद्ध थीं। उसे 'वली नियमत' की उपाधि मिली थी। 1549 ई. में जब हुमाँयू काबुल से बल्ख पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ, तब उसने हराम बेगम से सहायता माँगी, जो उसे तुरन्त दी गई। 1566 ई. में हराम बेगम ने काबुल की राजनीति में बड़ी दिलचस्पी दिखाई, परन्तु वह काबुल पर अधिकार न कर सकी। उसने बदखाशाँ के प्रशासन को संभाला। वह महत्त्वाकांक्षी महिला थी। अभिजात वर्ग के लोग और राजकीय परिवार के सदस्य उससे भयभीत रहते थे और उसका आदर भी करते थे।[7]

चुनाव के अफगान गवर्नर ताज खाँ सारंगखानी की पत्नी लाड मलका अत्यन्त सुन्दर और प्रखरबुद्धि की महिला थीं। उसकी उदारता से सैनिक, अधिकारी और अभिजात वर्ग के लोग उसका समर्थन करते थे। अन्त में ताजखाँ की मृत्यु के बाद शेरशाह ने उससे विवाह कर लिया और चुनाव पर अधिकार कर लिया।

अकबर के समय में उसकी सौतेली माँ महाचुचक बेगम का नाम उल्लेखनीय है। वह सक महत्त्वाकांक्षी महिला थी। उसका बेटा मिर्जा मोहम्मद हमीम काबुल का गवर्नर नियुक्ति किया गया (1556 ई.)। महाचुचक बेगम ने काबुल के प्रशासन को प्रभावित किया। अकबर की प्रमुख दाई माहम अनगा भी एक प्रभावशाली महिला थी। उसके ही कारण बैरम खाँ का जो अकबर का संरक्षक था, पतन हुआ (1560 ई.)। वह अकबर को प्रभावित करने में सफल हो सकी। दो वर्षों तक अकबर महल की स्त्रियों के प्रभाव में रहा, जिसका नेतृत्व माहम अनगा कर रही थी। 1562 ई. में अकबर ने इनके प्रभाव से अपने को मुक्त किया और उनके पुत्र को अपराध के लिए मृत्यु दण्ड दिया गया। कुछ समय के बाद पुत्रशोक में माहम अनगा की मृत्यु हो गई।[8]

अकबर की एक चचेरी बहन बरन्नुन्निसा बेगम थी। जिसका विवाह बदखशाँ के ख्वाजा हसन से हुआ था। काबुल के गवर्नर मिर्जा मुहम्मद हाकिम के विद्रोह करने के बाद अकबर ने उसे काबुल का गवर्नर नियुक्त किया (1581 ई.)। अकबर के शासनकाल में उसकी माँ मरियम मकानी और उसकी पत्नी सलीमा बेगम राजनीति में अधिक रूचि लेती थी। 1599 ई. में सलीम के विद्रोह करने पर मरियम मकानी ने अपना प्रभाव पिता–पुत्र पर डालकर समझौता कराया। 1601 ई. में दूसरी बार सलीम ने विद्रोह किया तब सलीमा बेगम और गुलबदन बेगम ने सलीम को अकबर से क्षमादान दिलाया।[9]

जहाँगीर के गद्दी पर बैठने के एक वर्ष के बाद उसके पुत्र खुसरों ने मिर्जा अजीज कोका के उसकसावे पर विद्रोह कर दिया। जहाँगीर ने विशिष्ट अमीरों से मंत्रणा की और निर्णय लिया कि मिर्जा को तुरन्त मृत्यु दण्ड दिया जाए, जिसका विरोध खानेजहाँ लोदी ने किया। ठीक उसी समय सलीमा बेगम ने जहाँगीर को पर्दे के अन्दर से यह कहकर बुलवाया कि सम्राट तुरन्त जनानखाने में आ जाएँ, नहीं तो स्त्रियाँ स्वयं उनके पास आएँगी। जहाँगीर को विवश होकर जनानखाने में जाना पड़ा और स्त्रियों के कहने पर मिर्जा अजीज कोका को क्षमा करना पड़ा। स्त्रियों के समझाने पर जहाँगीर ने खुसरो को अपने पास आने दिया।[10]

जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में अत्यन्त प्रभावशाली रहीं। उसने प्रशासन का कार्य चलाने के लिए अपना एक दल बनाया। उसने न केवल प्रशासनिक कार्य में बल्कि सैनिक क्षेत्र में भी अद्भुत कुशलता प्रदर्शित की। जब उसने अपने पति जहाँगीर को महावत खाँ के चुंगल से छुड़वाया। नूरजहाँ ने सामाजिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। उसने निर्धन मुसलमानों को सरकार की ओर से अनुदान दिया, जिससे वे अपनी पुत्रियों का विवाह कर सकें। उसने नए–नए डिजाइनों के वस्त्रों का उपयोग किया और नए फैशन चलाए। जहाँगीर की मृत्यु के बाद शाहजहाँ के गद्दी पर बैठने के पर उसने राजनीति से सन्यास ले लिया।[11]

शाहजहाँ के शासनकाल में मुमताज महल ने राजनीति में अपना प्रभाव बनाए रखा। उसने गुजरात के गवर्नर सैफ खाँ को शाहजहाँ के ओस से बचा लिया। मनुची के अनुसर मुमताजमहल ने पुर्तगालियों के विरुद्ध सैनिक अभियान के लिए शाहजहाँ को प्रेरित किया। 1631 ई. में मुमतालमहल की मृत्यु के बाद शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने राजनीति में रूचि दिखलाई और अपना प्रभाव स्थापित किया। जिस किसी को पदोन्नति के लिए सम्राट से प्रार्थना करनी होती थी, वह जहाँआरा के द्वारा अपना कार्य करवाता था।[12]

जहाँआरा ने मुगल परिवार के दुःखी सदस्यों को सांत्वना दी। उसके ही प्रभाव के कारण शाहजहाँ ने औरंगजेब को कई बार क्षमा किया और उसको अपने पद पर बने रहने

दिया। 1656 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह ने जहाँआरा को पत्र लिखा कि वह सम्राट पर अपना प्रभाव डाले और औरंगजेब को उसके राज्य पर आक्रमण करने से रोकने में सहायता करे। उत्तराधिकार के संबंध में विजयी होने के बाद औरंगजेब ने अपने भाईयों को मरवा डाला और शाहजहाँ को कैद कर लिया। ऐसे समय में जहाँआरा निरन्तर शाहजहाँ की सेवा करती रही। जहाँआरा अपने मृत भाइयों के बच्चों की देखभाल करती रही। औरंगजेब ने भी सदैव जहाँआरा का सम्मान किया।

रोशनआरा बेगम शाहजहाँ की दूसरी पुत्री थी। उसने सदैव औरंगजेब का साथ दिया। वह अपने बड़े भाई दारा की विरोधी थी और उसने दारा को मृत्यु दण्ड देने के लिए दबाव डाला। औरंगजेब ने उसे 1669 ई. में 'शाह बेगम' की उपाधि दी और 5 लाख रूपया दिया। औरंगजेब की दो पत्नियों, दिलरस बानु बेगम और उदयपुरी महल ने उस पर अपने प्रभाव डाले। 1662 ई. में जब औरंगजेब बीमार पड़ा, रोशनआरा बेगम ने शाही मोहर अपने अधिकार में रखी और सम्राट की बीमारी को छिपाए रखा।[13]

औरंगजेब की पुत्रियों ने भी राजनीति में रूचि दिखलाई। जेबुनिसा बेगम ने शाहनवाज खाँ को अपने पिता के हाथों दंडित होने से बचा लिया। जुबुनिसा ने अपने छोटे भई मुहम्मद अकबर का साथ दिया, जिससे अकबर के विद्रोह करने पर और भागने पर उसे बंदी बनाया गया। उसका वजीफा बंद कर दिया गया (1702 ई)। औरंगजेब ने अपनी दूसरी पुत्री जीनतुन्निसा बेगम को मराठा कैदियों, अम्मु की विधवा और शाही देखभाल का कार्य सौंपा।[14]

काबुल के गवर्नर अमीर खाँ की पत्नी साहिबजी प्रशासकीय मामलों में दक्ष थी। वह राजनीति में भाग लेती थी। काबुल प्रान्त का वास्तविक गवर्नर उसे ही समझा जाता था।

जहाँदारशाह के शासनकाल में लाल कुँवर प्रशासकीय मामलों में हस्तक्षेप करती थी। उसके ही कहने पर लोगों को जागीरें दी जाती थीं। उसके सगे संबंधियों को उसकी सिफारिश पर जागीरें दी गईं। उसे शाही चिह्न प्रदान किए गए। 1712–13 ई. में फरूखसियर की माँ ने राजनीति में भाग लिया और सैय्यद भाईयों के समर्थन से फरूखसियर मुगल सम्राट बन गया। बाद में अपनी माँ की सिफारिश पर मुहम्मद मुराद कश्मीरी को विकालत खाँ की उपाधि और 1000 का मनसब दिया।[15]

मुहम्मदशाह के समय में उसकी माँ नवाब कुरेसिया बेगम ने राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसके प्रयासों के कारण सैय्यद भाईयों का पतन हुआ। उसके शासनकाल में कोकी ज्यू ने राजनीति में सक्रिय भाग लिया। उसने सम्राट की माँ नवाब कुरेसिया को अपने ज्योतिष के ज्ञान से प्रभावित किया। मुहम्मदशाह के सम्राट बनने के बाद कोकी ज्यू को शाही मोहर रखने के लिए दिया। बहुत से अमीरों ने ऊँची जागीरों के लिए उसके माध्यम से सम्राट से सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें सफलता भी मिली। इस प्रकार कोकी ज्यू ने 'पेशकश' के रूप में बहुत–सा धन संग्रहित किया।

मुगल काल में राजकीय परिवार की स्त्रियों को विविध उपाधियों से सम्मानित किया था। जैसे 'मरियम कमानी', मरियमुस जाननी, बिलकिस मकानी सबसे महत्त्वपूर्ण उपाधि 'नूर महल' और 'नूरजहाँ' ने मेरून्निसा को दी। उसे 'शाह–बेगम' भी कहा जाता था। शाहजहाँ ने अपनी पत्नी अर्जुमन्दबानू को 'मुमताज महल' की उपाधि दी और समृति में ताजमहल बनवाया।[16]

जहाँआरा को 'साहिबातु जजमानी' पादशाह बेगम की उपाधियाँ दी गई। औरंगजेब की पुत्री जीनतुन्निसा बेगम को 'पादशाह बेगम' की उपाधि मिली। औरंगजेब ने अपनी पत्नियों को उन स्थानों के नाम की उपाधियां दीं जहाँ से वे आई थीं। जैसे – 'औरंगाबादी महल', 'उदयपुरी महल'। जहाँदार शाह की प्रिय बेगम लाल कुँअर को 'इमतियाज महल' की उपाधि मिली। इसी प्रकार मुहम्मद शाह की माँ का 'हसरत बेगम' और 'मलिकाये जमानी' की उपाधियाँ दी गईं। इन स्त्रियों को व्यक्तिगत जागीरें और नकद धन शाही खजाने से दिया जाता था।[17] सबसे अधिक अनुदान 2 करोड़ रूपये वार्षिक लाल कुँअर को जहाँगीर शाह ने दिया।

ऐसा समझा जाता है कि राजकीय परिवार की कुछ महिलाओं ने निजी व्यापर की रूचि दिखलाई और माल भेजने के लिए अपने–अपने अलग–अलग जहाजों की व्यवस्था भी कर रखी थी। जहाँगीर की माँ का जहाज 1200 टन माल ले जाने की क्षमता रखता था। इसी प्रकार नूरजहाँ के पास कई जहाज थे। वह विदेशी व्यापार में दिलचस्पी रखती थी। नूरजहाँ का मुख्य प्रतिनिधि उसका भाई आसफ खाँ था। जहाँआरा भी अपना निजी व्यापार करती थी और उसके भी कई जहाज थे। उसने अंग्रेज और हालैण्ड के व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित किया और व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त किया।

मुगल सम्राटों ने अपने हरम के जानानखाने को सुव्यवस्थित किया। स्त्रियों की सुरक्षा के लिए अंगरक्षक (अहदीज) महल के चारों तरफ रखे जाते थे। महल में नाजिर होता था, जिसकी देखरेख में अंगरक्षक कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त मुगल सम्राट महल के अदर गुप्तचर स्त्रियों की भी नियुक्ति करता था। जिनका कार्य हरम के विषय में प्रतिदिन विस्तृत जानकरी देना होता था। कोई बाहरी व्यक्ति हरम के अन्दर नहीं जा सकता था।[18]

अभिजात वर्ग की स्त्रियाँ भी बड़े ही शानो–शौकत से रहती थीं। ट्रेवर्नियर ने लिखा है, "अफरखाँ की स्त्री बहुत उदारता से खर्च करती थी। उसने एक दावत में सम्राट अकबर को भी आमंत्रित किया था।"[19]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मध्ययुगीन भारत की स्त्रियाँ राजनीतिक रूप से ही नहीं अपितु सामाजिक रूप से भी अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखती थीं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

1. ए.एल. श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ. 316
2. के.एम. अशरफ, लाईफ एण्ड कंडीसन्स द पिपुल्स ऑफ हिस्दुस्तान, पृ. 132
3. अबुलफजल अनुवादित एच बेवरिज, अकबरनामा, भाग–3, पृ. 198
4. के.एम. अशरफ, वही, पृ. 142
5. के.एम. अशरफ, वही, पृ. 296
6. ए.एल. श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 123
7. ए.एल. श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ. 216
8. अबुल फजल, गम्लिपस ऑफ मीडिवल इण्डियन कल्चर, पृ.
9. हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग–5, पृ. 37
10. पी.एन. चौपड़ा, सोसायटी एण्ड कल्चर ड्यूरिंग द मुगल ऐज, पृ. 203
11. सतीशचन्द्र, मीडिवल इण्डिया फरोम सल्तनत टू द मुगल, पृ. 182
12. पी.एन. चौपड़ा, सम आस्पेक्टस ऑफ सोशल लाईफ ड्यूरिंग द मुगल ऐज, पृ. 220
13. जदूनाथ सरकार, हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, पृ. 148
14. राशीद अब्दुल, सोसायटी एण्ड कल्चर इन मीडिवल इण्डिया, पृ. 211
15. वही, पृ. 213
16. इरफान हबीब, मीडिवल इण्डिया–1, पृ. 139
17. वही, पृ. 140
18. ए.एल. श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ.
19. बर्नियर, ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर, पृ. 138